पाठ–11
वीर नारी

सूर्यमल्ल मीसण

कवि परिचय

जन्म–1815 ई.

मृत्यु–1863 ई.

राजस्थान की वीर प्रसूता भूमि पर जन्म लेने वाले सूर्यमल्ल मीसण का जन्म चारणों की मीसण शाखा के एक प्रतिष्ठित परिवार में बूंदी में हुआ। इनके पिता का नाम चंडीदान था, जो बूंदी–दरबार के प्रधान कवियों में थे। वस्तुतः सूर्यमल्ल मीसण को काव्य प्रतिभा पैतृक परम्परा से प्राप्त हुई थी। उनके पिता ही नहीं पितामह भी डिंगल के श्रेष्ठ कवि थे।

सूर्यमल्ल हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, डिंगल और पिंगल भाषाओं में पारंगत थे। अध्यवसायी होने के कारण इन्होंने काव्य शास्त्र के साथ–साथ इतिहास, व्याकरण, मीमांसा, न्याय शास्त्र, संगीत–दर्शन और ज्योतिष का गम्भीर अध्ययन किया। इन विषयों में इनकी असाधारण पैठ का प्रभाव इनकी रचनाओं में भी यत्र–तत्र देखा जा सकता है। सूर्यमल्ल मीसण ओजस्वी कवि होने के साथ–साथ सत्यनिष्ठ और स्वाभिमानी व्यक्तित्त्व के धनी भी थे।

कृतियाँ

वंश–भास्कर, वीर सतसई, बलवंत विलास, राम रंजाट, छंदोमयूख, सती रासो , धातु रूपावलि एवं फुटकर कवित्त, सवैये आदि।

पाठ परिचय

संकलित काव्यांश महाकवि सूर्यमल्ल मीसण की लोक प्रसिद्ध कृति 'वीर सतसई' से लिया गया है। यह एक सुविदित तथ्य है कि राजस्थान के वीरों का इतिहास युद्धों और संघर्षों का इतिहास रहा है। ऐसी स्थिति में जिन परिवारों के पुरुष अपना जीवन युद्ध की विभीषिकाओं के मध्य बिताया करते थे, उनके परिवार की स्त्रियों के जीवन–व्यवहार में भी वीरोचित त्याग, स्वाभिमान, दृढ़ता, निर्भीकता आदि गुणों का होना स्वाभाविक था। संकलित दोहों में कवि ने इसी प्रकार की वीर रमणियों का वर्णन कर, राजस्थान की वीर–संस्कृति को अभिव्यक्ति प्रदान की है।

वीर नारी

नरां! न ठीणों नारियां, ईखो संगत अेह
सूरा घर सूरी महळ, कायर कायर गेह।।1।।

सहणी सब–री हूँ सखी! दो उर उळटी दाह
दूध– लजाणो पूत, तिम, बळय–लजाणो नाह।।2।।

वीर–माता

हूँ बळिहारी राणियां, जाया बंस छतीस

सेर सलूणो चूण ले, सीस करै बगसीस।।3।।
हूँ बळिहारी राणियां, थाळ वजाणै दीह
वींद जमी–रा जे जणै, सांकळ–ढीटा सीह।।4।।
हूँ बळिहारी राणिया, भ्रूण सिखावण भाव
नाळो वाढण–री छुरी, झपटै जणियो साव।।5।।
थाळ वजतां हे सखी! दीठो नैण फुळाय
वाजा–रै सिर चेतणो, भ्रूणां कवण सिखाय?।।6।।
नागण–जाया चीटला, सिंघण–जाया साव
राणी जाया नह रुकै, सो कुळ–वाट सुभाव।।7।।
इळा न देणी आप–री, रण–खेतां भिड़ जाय
पूत सिखावै पालणै, मरण–वडाई माय।।8।।
बाळा! चाल म वीसरे, मो थण जहर समाण
रीत मरंता ढील की, ऊठ थियो घमसाण।।9।।
और जहर मुख आवियां, भेजै झट पर–धाम
अतरो अंतर मूझ पै, मारै पडियां काम।।10।।

वीर पत्नी

नह पड़ौस कायर नरां, हेली! वास सुहाय
बळिहारी जिण देसड़ै, माथा मोल बिकाय।।11।।
विण मरियां, विण जीतियां, जे धव आवै धाम
पग–पग चूड़ी पाछटू, तो रावत–री जाम।।12।।
गोठ गया सब गेह–रा वणी अचाणक आय
सिंघण–जायो सिंघणी, लीधी तेग उठाय।।13।।

वीर देवरानी

घोडां चढणो सीखिया, भाभी ! किसड़ै काम?
बंब सुणीजै पारको, लीजै हाथ लगाम।।14।।
भाभी! हूँ डोढ्यां खडी, लोधां खेटक–रूक
थे मनवारो पाहुणां, मेड़ो झाल बँदूक।।15।।

<u>शब्दार्थ</u>

ठीणो= उपालम्भ। ईखो= देखो। सूरां= वीर। सूरी= वीरांगना। सहणी = सहन करना। दाह = जलन। वळय = कंगन। गेह= घर। नाह= स्वामी। सलूणो = नमक युक्त। बगसीस = भेंट। थाळ बजाणै दीह = पुत्र जन्म का दिन। वींद = स्वामी। सांकळ ढीटा = जंजीरों की परवाह न करने वाले। सीह = शेर। भ्रूण= गर्भस्थ शिशु। वाढण–री छुरी= काटने की छुरी।

साव= शावक। दीठो = देखना। नैण फुळाय = आँखें फाडकर। वाजां–रे = बाज पक्षी को। चीटला= सपोला, साँप का बच्चा। कुळ वाट = कुल परम्परा। इळा= पृथ्वी। वाळा = बच्चा, बालक। वीसरे= भूलना। म = मत, नहीं। रीत = रीति, परम्परा। ढ़ील= देरी। थियो = ठन जाना। घमसाण = भीषण युद्ध। अतरो = इतना। पडियां= पड़ने पर। नह = नहीं। वास= रहना। देसड़ै= देश पर। धव = दौड़ता हुआ। धाम= घर। पाछटूं = बिखेर दूँ। रावत–री= राजपूत की। जाम = जायी हुई, पैदा हुई। गोठ= सामूहिक भोज। गेह–रा = घर के। लीधी तेग उठाय = तलवार उठा ली। बंब= नगाड़ौ। पारको= दूरी पर से। लगाम= वल्गा, घोड़े की रास। डोढ़यां= ड्यौढ़ी। लोधां = धारण किये हुए। खेटक= ढ़ाल। रूक= तलवार। मनवारो= मनुहार, स्वागत। पाहुणां = अतिथि (यह शब्द यहाँ बिना बुलाये आये शत्रु के लिए प्रयुक्त हुआ है।)

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'वळय–लजाणो नाह' से आशय है–
   (क) दूध को लजाने वाला पुत्र
   (ख) चूडियों को लजाने वाला पति
   (ग) युद्ध से भागने वाला पति
   (घ) युद्ध में जीतने वाला पति
2. 'माथा मोल बिकाय' से कवि क्या अभिप्राय है?
   (क) सिरों का व्यापार होना
   (ख) सिर कटवा देना
   (ग) अभिमान में सिर का बलिदान कर देना
   (घ) स्वामी के अन्न का बदला सिर देकर चुकाना

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

3. वीरों और कायरों के घर की स्त्रियों के स्वभाव में अन्तर बताइये।
4. 'दूध लजाणो पूत' से कवि का क्या आशय है?
5. सिंह किस चीज की परवाह नहीं करते?
6. 'चीटला' और 'साव' में क्या अन्तर है?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

7. वीर नारी को करूँ–सी दो बातें असहनीय हैं?
8. क्षत्रिय बालक जन्म के समय नाल के काटने की छुरी की ओर क्यों झपटता है?
9. वीर माता अपने पुत्र को पालने में क्या संस्कार देती है?
10. 'वाळा! चाल म वीसरे' कहकर वीर माता ने कुल की किस परम्परा को न भूलने की बात कही है ?

निबन्धात्मक प्रश्न

11. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(क) ''इला न देणी आप री ..... मरण–वडाई माय।''

(ख) '' विण मरियां, विण जीतियां ..... रावत–री जाम।''

(ग) ''गोठ गया सब गेह–रा ..... लीधी तेन उठाय।''

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तर मालाः

1. (ख)
2. (घ)